टीबी की कहानी
नुक्कड़ नाटक
की ज़ुबानी

राज्य टीबी कार्यालयों द्वारा नुक्कड़ नाटक पर
आधारित चुनी गई कहानियां

विषय सूची

कालिया खाएगा डॉट्स की गोली 3

अकबर के राज में टीबी का मुफ्त इलाज! 5

নাটকৰ শিৰোনামা 11

कालिया खाएगा डॉट्स की गोली

दृश्य 1

कालियाः खों, खों, खों।

गब्बरः अरे ओ सांभा बहुत खांस रहा है रे ये कालिया।

सांभाः हाँ सरदार बहुत दिनों से खांस रहा है।

गब्बरः अरे ओ कितने दिन से खांसी है रे कालिया।

कालियाः सरदार यही कुछ दिन से है।

सांभाः नहीं सरदार। ये झूठ बोल रहा है। दो हफ्ते से खांस रहा है।

गब्बरः दो हफ्ते से खांसता है और हमें अभी तक पता नहीं। ये बहुत नाइंसाफी है रे।

कालियाः सरदार गलती हो गई।

गब्बरः अरे ओ सांभा, क्या इसको पता नहीं कि जब भी किसी को दो हफ्ते से ज्यादा खांसी होती है तो उसे शायद टीबी का बीमारी हो सकती है।

कालियाः सरदार टीबी मुझे, वो कैसे? अब मैं क्या करूँ? क्या मैं मर जाऊंगा? मैं मरना नहीं चाहता हूँ सरदार मुझे बचाओ, मैंने आपका नमक खाया है।

गब्बरः डर मत कालिया। जो डर गया तो समझ वो मर गया। बोल सांभा इसका क्या किया जाए।

सांभाः सरदार, सुना है कि ठाकुर ने रामगढ़ वासियों के लिए अस्पताल बनाया है। जय और वीरू नाम के डॉक्टर छोरों को लाया है। मेरा कहना है कि कालिया को अभी के अभी वहां भेजना चाहिए।

गब्बरः कालिया सुन उसमें जा और अपनी जांच कराके आ – जा रे सांभा इसे ले जा।

कालियाः हुकुम सरकार।

दृश्य 2

सांभाः अरे ओ डॉक्टर हमारा जोड़ीदार दो हफ्ते से खांस रहा है। इसकी तनिक जांच तो करो।

डॉक्टरः देखो सांभा, इस अस्पताल में जब भी कोई दो हफ्ते से अधिक खांसी का मरीज़ आता है उसकी दो बलगम जांचें की जाती हैं।

सांभाः तो हम कहां जाएं।

डॉक्टरः ये परची ले के साथ वाली खोली में बलगम की जांच करा लो।

सांभाः डॉक्टर साहब हमने ये रिपोर्ट लाया है।

डॉक्टरः रिपोर्ट देखके बोलता है कि सांभा – कालिया को तो टीबी हुआ है। डरने की कोई बात नहीं आपको डॉट्स में – 6 महीने दवाई मुफ्त मिलेगी। अभी आप जाओ साथ में बसंती से मिलो और सुनो – आपको एचआईवी की जांच भी करनी होगी।

बसंतीः आओ – मुझे फिजूल की बात करनी नहीं आती लेकिन इस कालिया को टीबी हो गई है। लेकिन टीबी का इलाज पूरी तरह सम्भव है। उसको अभी 6 महीने की दवा खानी पड़ेगी। पहले 2 महीने हर दूसरे दिन यहां आकर दवा खानी होगी उसके बाद 4 महीने तक सप्ताह में एक बार दवाई यहां आकर खानी होगी तथा दो बार हर दूसरे दिन घर पर ही खानी होगी। अगले सप्ताह की दवाई लेने जब यहां आयेंगे तो दवाई का खाली रेपर साथ में लाना होगा। दवाई का असर देखने के लिए 2 माह के बाद फिर से बलगम की जांच करानी होगी।

कालियाः बसंती मुझे कुछ परहेज करना पड़ेगा।

बसंतीः परहेज तो कुछ नहीं सब खा सकता है। दवाई समय–समय पर खानी पड़ेगी। चलो अभी ये खा लो। ये आज की दवाई। फिर परसो आना है। हम चलते हैं, फिर आते हैं।

दृश्य 3

सांभाः सरदार, कालिया को टीबी निकला और बोला है कि 6 महीने गोली खानी पड़ेगी।

गब्बरः अब तेरा क्या होगा रे कालिया।

कालियाः सरदार मैंने आपका नमक खाया है।

गब्बरः अब गोली खा। ये नहीं डॉट्स की गोली खा!

अकबर के राज में टीबी का मुफ्त इलाज!

पात्र परिचय

1. सूत्रधार 2. राजा अकबर 3. बीरबल 4. मोहन लाल
5. राधा–मोहन की पत्नी 6. गोरखनाथ – तांत्रिक 7. शांन्ति – मोहन की मां

गीतः जागो जागो सोने वालों जागो
अंधकार और अंधविश्वास को मिलकर दूर भगाये
खुद समझे और सबको समझाये उजियाला फैलाये
जागो जागो सोने वालों जागो

सूत्रधारः मैं आज आपको एक कहानी सुनाने आया हूं। बहुत पुरानी बात है। एक छोटे से गांव रामपुर में मोहन लाल का परिवार रहता था। मोहन लाल बहुत ही लापरवाह था और उसके परिवार वाले थे अंधविश्वासी। एक दिनः

(सुबह का दृश्यः मोहन लाल पलंग पर लेटा है जोर–जोर से खांस रहा है)

राधाः हे भगवान ये क्या हो रहा है। मांजी ओ मांजी! जल्दी आइये जल्दी आइये!

शांन्तिः अरे क्यों गला फाड़ कर चिल्ला रही है? बहू ऐसा क्या हो गया।

राधाः देखिये मांजी इनकी तो हालत बिगड़ती ही जा रही है दो हफ्ते से ज्यादा हो गया है खांसते–खांसते देखिये गले से जो बलगम निकला है उसमें खून भी आया है।

शांन्तिः और बहू दिन हर दिन मेरे मोहन का वजन कम होता जा रहा है।

राधाः हां मांजी और शाम होते ही शरीर तपने लगता है।

शांन्तिः लगता है बहू कोई भूत–प्रेत कोई ऊपरी हवा का चक्कर है।

राधाः हां मांजी मुझे भी ऐसा ही लगता है।

शान्तिः तो बहू हम क्यों न इसे किसी तांत्रिक को दिखायें?

राधाः हां मां जी पहाड़ी के पीछे एक तांत्रिक बाबा रहते हैं गोरखनाथ जी। हम इन्हें उनके पास ले चलते हैं।

(संगीत)

सूत्रधारः देखा आपने? सास और बहू ने अपना दिमाग दौड़ाया और तांत्रिक गोरखनाथ के पास ले चलीं। मैं आपको बता दूं तांत्रिक गोरखनाथ एक नम्बर का धूर्त और ठग है। जब वे दोनों मोहन लाल को लेकर वहां पहुचीं तबः

(दृश्यः मोहन लाल जोर–जोर से खांस रहा है और तांत्रिक उसे देख रहा है।)

तांत्रिकः आल तू जलाल तू आई बला को टाल तू, अकडम बकडम सब हजम, अला बला सब हटा।

शांन्तिः तांत्रिक बाबा ये तो बताइये कि मेरे मोहन को क्या हुआ है।

तांत्रिकः शैतान बहुत नाराज लगता है। मुझको लगता है इस पर भारी विपदा आई है... कोई चुड़ैल इस पर चढ़ आई है।

राधाः तांत्रिक बाबा चुड़ैल! अरे बाप रे मैं तो इन्हीं के पास सोई थी अगर मुझे कुछ कर देते तो।

तांत्रिकः ज्यादा ना बोल औरत जो मैं कह रहा हूं सुन और नहीं तो जा यहां से

राधाः नहीं, तांत्रिक बाबा आप बताइये कि ये चुड़ैल कैसे भागेगी

तांत्रिकः ये चुड़ैल ज्यादा खतरनाक है। ये तुम्हारा सबका अहित करेगी पूरे परिवार को खत्म कर देगी।

शांन्तिः पर तांत्रिक बाबा हमने इसका क्या बिगाड़ा है ये हमारे पीछे क्यों पड़ी है।

तांत्रिकः रूको मैं बताता हूं... ऐ मेरे तिलस्मी गोले बता रे चुड़ैल इसको क्यों सता रही है।

(संगीत)

तांत्रिकः हूं... ये चुड़ैल तुम्हारे परिवार को इसलिये तंग कर रही है क्योंकि तुम्हारे परिवार के किसी व्यक्ति ने पूर्व जन्म में इसे परेशान किया है और इसी बात का ये बदला ले रही है।

राधाः अब तांत्रिक बाबा आप ही बताइये कि ये हमारा पीछा कैसे छोड़ेगी।

तांत्रिकः हूं... ये चुड़ैल इतनी आसानी से तुम्हारे परिवार को नहीं छोड़ेगी। बहुत खर्चा करवाकर जायेगी। अकड़म बकड़म सब हजम, अला बला सब खत्म।

शांन्तिः तांत्रिक बाबा जो भी खर्चा होगा मैं सब करूंगी।

राधाः पर मांजी... कैसे

शांन्तिः तू चिन्ता न कर बहू मैं सब कर लूंगी चाहें मुझे अपने जेवर ही क्यों न बेचने पड़ें।

तांत्रिकः हूं... जेवर तो फिर बन जाएंगे पर चुड़ैल से पीछा छुड़ाना जरूरी है। अच्छा ऐसा करो कि जल्दी से जाकर पांच मुर्गे, दो बोतल शराब और 2 हजार रुपये लाओ।

शांन्तिः पर इतना सारा...

तांत्रिकः देर मत करो वर्ना ये चुड़ैल...

शांन्तिः जी आप नाराज मत होइये हम अभी ले कर आते हैं।

तांत्रिकः जाओ इस मोहन को यहीं छोड़ जाओ।

शांन्तिः चल बहू जल्दी चल।

राधाः हां मांजी चलिये।

(संगीत)

सूत्रधारः सास और बहू घर चली गई और दो घन्टे बाद रुपये और सारा सामान लेकर तांत्रिक गोरखनाथ के पास वापस पहुंचीं। आइये देखते हैं क्या किया तांत्रिक गोरखनाथ ने।

(संगीत)

तांत्रिकः अरे वाह तुम लोग तो बड़ी जल्दी आ गई लाओ ये सब मुझे दे दो और तुम दोनों वहां चुपचाप बैठ जाओ देखो मैं कितनी जल्दी चुड़ैल से पीछा छुड़ाता हूं।

शान्तिः जी बाबा।

तांत्रिकः आल तू जलाल तू आई बला को टाल तू
अकड़म बकड़म सब हजम, अला बला सब खत्म

जहां से आई वहां भाग जा आम फट
लो अब ये बिल्कुल ठीक हो जायेगा।

शांन्तिः सच तांत्रिक बाबा

तांत्रिकः तो क्या मैं झूठ बोल रहा हूं।

राधाः नहीं बाबा। नहीं मांजी चलिये (तीनों चले जाते हैं)

तांत्रिकः आह मजा आ गया 6 दिन की शराब, दो दिन का खाना और दो हजार मिल गये। ऐसे ही बेबकूफ लोग आते रहे तो अपना धंधा चलता रहेगा। बढ़िया बेवकूफ बनाया चुड़ैल के नाम पर।

(संगीत)

(दृश्यः मोहन लाल पलंग पर लेटा है जोर–जोर से खांस रहा है।)

राधाः मांजी दस दिन हो गये पर कोई फायदा नहीं हुआ क्या करें।

शांन्तिः सच बहू अब तो हमारे पास तांत्रिक बाबा को देने के लिए पैसे भी नहीं बचे।

राधाः मांजी क्यों न हम अकबर बादशाह के पास चलें। वो हमारी मदद जरूर करेंगे।

शांन्तिः हां बहू हम कल ही चलेंगे अकबर बादशाह के पास

(संगीत)

सूत्रधारः अब दोनों मोहन को लेकर अकबर बादशाह के दरबार में जायेंगे। आइये हम भी चलते हैं। अकबर के दरबार में देखते हैं वहां क्या हो रहा है।

(संगीत)

दरबारीः शहनशाहों के शहनशाह जिल्ले सुभानी बादशाह अकबर तशरीफ ला रहे हैं।

अकबरः बीरबल!

बीरबलः जी जहांपनाह।

अकबरः बीरबल, ये बताओ कि हमारे राज्य में कुल कितने कौव्वे हैं।

बीरबलः जहांपनाह हमारे राज्य में कुल 1 लाख 12 हजार 3 सौ 20 कौव्वे हैं।

अकबरः और यदि बीरबल से संख्या कम निकली तो?

बीरबलः जहांपनाह हो सकता है कुछ कौए अपने रिश्तेदारों से मिलने दूसरे राज्य में गये हों।

अकबरः अच्छा और यदि ज्यादा निकले

बीरबलः जहांपनाह ये भी तो हो सकता है कि कुछ कौए अपने रिश्तेदारों से मिलने हमारे राज्य में आये हों।

अकबरः वाह बीरबल वाह! तुम सचमुच बहुत समझदार और हाजिर जबाब हो तुम!

दरबारीः जहांपनाह का इकबाल बुलंद हो।

अकबरः बोलो दरबारी

दरबारीः जहांपनाह दो औरतें और एक आदमी आपसे मिलना चाहते हैं।

अकबरः उन्हें तुरन्त पेश किया जाये।

(संगीत)

शान्तिः महाराज की जय हो।

अकबरः बोलो क्या परेशानी है तुम्हारी

राधाः महाराज इन्हें दो हफ्ते से ज्यादा हो गया है। खांसते–खांसते इनका बुरा हाल है। गले से जो बलगम निकलता है उसमें खून भी आता है।

शान्तिः और महाराज दिन–ब–दिन मेरे बेटे मोहन का वजन भी कम होता जा रहा है।

राधाः और शाम होते ही शरीर तपने लगता है। रात में पसीना आता है। खांसी की सब दवा दे दी।

शान्तिः और महाराज यहां तक कि तांत्रिक बाबा को भी दिखा दिया पर।

अकबरः ये तो हमारी समझ से भी परे है बीरबल... तुम बताओं क्योंकि तुम ही हमारे दरबार में सबसे बुद्धिमान हो ऐसा इसे क्या हुआ है हफ्ते से ज्यादा हो गया है। खांसते–खांसते गले से जो बलगम निकलता है उसमें खून भी आता है। वजन भी कम होता जा रहा है और शाम होते ही शरीर तपने लगता है रात को पसीना आता।

बीरबलः जहांपनाह मेरे ख्याल से ये व्यक्ति क्षय रोग से पीड़ित है। इसके बलगम की जांच कराना जरूरी है और यदि क्षय रोग है तो पूरा इलाज कराना भी जरूरी है। डॉट्स पद्धति से क्षय रोग को मिटाना बहुत आसान है।

अकबरः अच्छा

बीरबलः जी जहांपनाह डॉट्स पद्धति क्षय रोग के उपचार की उत्तम पद्धति है। डॉट् पद्धति द्वारा मरीज को औषधालय में ही औषधि खिलाई जाती है। डॉट् पद्धति क्षय रोग के इलाज का पक्का वादा है।

अकबरः वाह बीरबल वाह! तुम सचमुच बुद्धिमान हो पर ये तो बताओ ये सब तुम्हें कहां से पता चला।

बीरबलः जहांपनाह मैं एक बार पास के राज्य में गया था वहां एक नाटक में बड़े सुन्दर से गीत द्वारा क्षय रोग के बारे में बताया गया था।

अकबरः हूं तो बीरबल अपने राज्य में भी मुनादी करवा दी जाये कि किसी को भी दो हफ्ते से ज्यादा खांसी आये, बलगम में खून आये, वजन भी कम होता जाये और शाम होते ही शरीर तपने लगे तो तुरन्त बलगम की जांच कराये और क्षय रोग की पुष्टि हो तो डॉट् पद्धति द्वारा क्षय रोग का पुरा उपचार कराये।

बीरबलः जी जहांपनाह

अकबरः और बीरबल बलगम की जांच और क्षय रोग का पूरा उपचार राज्य की तरफ से मुफ्त में किया जायेगा।

भीड़ः जहांपनाह की जय हो, बादशाह अकबर अमर रहे!

गीतः दो हफ्ते तक खांसी आये... और वजन भी कम हो जाये
हल्का–हल्का रहे बुखार... क्षय रोग के लक्षण सारे
जांच करा के करो उपचार
कैसे कराये जांच दवाई पैसा पास नहीं है भाई
सरकारी अस्पताल में है जांच दवाई बिल्कुल मुफ
क्षय रोग की जड़ को मिटाकर हो जाओ बिलकुल चुस्त
डॉट् पद्धति से देखो ऐसा उपचार हो भाई
स्वास्थ्यकर्ता खुद मरीज को सामने खिलाये दवाई

নাটকৰ শিৰোনামা
মানুহৰ বাবে

	মুখ্য চৰিত্রসমূহ	অভিনয়তঃ
১)	ডট্চ প্রভাইডাৰ - মিঃ চৌধুৰী	১) ড. এ. কে. চৌধুৰী ডি.টি.ও. - নলবাৰী
২)	মঙলু মল্লৰা - টিবি বেমাৰী	ইমদাদুৰ ৰহমান (চি.এফ.) কৰিমগঞ্জ জিলা
৩)	চামেলী মল্লৰা - মঙলুৰ মা	ড. বন্দনা চৌধুৰী (আই.আৰ.এল)
৪)	ৰতন ভূঞা - আৰোগ্য ৰোগী	ড. মণ্টু কুঃ দাস ডি.টি.ও. ৰৰপেটা
৫)	ডঃ ৰৰা - ডক্টৰ	ডঃ কে.কে. ৰৰা ডি.টি.ও. নওগাঁও
৬)	ভূপেন দাস - আৰোগ্য ৰোগী (২য়)	মুকুন্দ গোপাল দেবনাথ (চি.এফ. কোকৰাঝাৰ জিলা)
৭)	পোনাকন (বাবা) - ল্ললৰাল্ক	পবিত্র কুঃ দাস (চৰিত্রসমূহ সম্পূর্ণ কাল্পনিক)

(চৰিত্রসমূহ সম্পূর্ণ কাল্পনিক)

(১ম দৃশ্য)

উপস্থাপন ঃ- সময় ঃ গধুলী

এখনি দুখীয়াৰ পঁজাঘৰ। এজন প্রাথমিক বিদ্যালয়ৰ ছাত্রই ঘৰৰ বাৰান্দাত নেওঁতা পঢ়ি থাকে দেউতাকে এটা গান কলি গাই গাই গামোচাৰে মুখ মা লৰাজনৰ ওছৰলৈ আহে আৰু সোধে -

ৰতনঃ বোপা, তুমি কি পঢ়ি আছা?

পোনাকন (লৰা)ঃ দেউতা মই নেওঁতা পঢ়ি আছোঁ।

ৰতনঃ (আগ্রহেৰে চায়) কি তুমি নেওঁতা পঢ়ি আছা? আছা? পঢ়াচোন পঢ়া অলপ শুনোহক।

পোনাকনঃ (পঢ়িবলৈ আৰম্ভ কৰে) ২X১=২, ২X২=৪, ২X৩=১২ (পোনাকনে ভূল কৰি পঢ়ে)।

দেউতাঃ (ধমকি মাৰি) কি! ২X৩=১২ কোনে কি কলি?

লক্ষ্মীঃ মাষ্টৰে আকৌ। আমাৰ মাষ্টৰে তেনেকৈয়েই শিকায়।

দেউতাঃ তোমাৰ মাষ্টৰে কি তেনেকৈয়েই শিকাইছে। পঢ়া ভালকৈ। (খঙেৰে) (এনেকৈ কিছু সময় গৈ থাকে)। (এনেতে ডট্ প্রোভাইডাৰ চিঞৰি চিঞৰি আহে)

ডট্ প্রোভাইডাৰঃ (মিঃ চৌধুৰী) ৰতন ৰতন কুনু ঘৰত আছা? (ৰতনে মাত দিয়ে)

ৰতনঃ আছো আছো। অ আমাৰ চৌধুৰি দেখোন। কি হল্লল আজি বহুদিনৰ মুৰত, ভালে আছেনে? কওকচোন। (না ঘৈনিয়েকক বহাৰ অকান আনিবলৈ কয়)

ডট্ প্রোভাইডাৰঃ আছো আছো। বাৰু তোমাৰ কি খবৰ। বৰ্ত্তমান তোমাৰ চেহেৰাটো দেখোন একেবাৰে আপলৰ দৰে আগতে কি আছিলা এতিয়া কেনেকুৱা হৈছা। সেইযে মা কৈছিলো নহয় টিবিৰ দৰৱ ছমাহ নিয়মীয়াকৈ খালেহে সম্পূৰ্ণ ভাল হয়। (হাঁহি ..... আত্মসন্তুষ্টিৰেই .....)

ৰতনঃ চাহ নখাব আৰু আপোনাৰ কাৰণে মোৰ জীৱন বাচান নহলে হয়তো টিকট-কাটিবলৈ লাগিলেহেঁতেন। আপুনি মোৰ ঈশ্বৰ। (এইবুলি কৈ সেৱা কৰিব ওলায়)।

ডট্ প্রোভাইডাৰঃ এই এই তুমি এইবোৰ কি কৰিছা নাপায় নহয় এইখিনি ডট্ প্রভাইডাৰ হিচাপে মোৰ দায়িত্ব আৰু কৰ্ত্তব্য হেৰা ৰতন, এটা বাঘা হল নহয়, মানে তোমালোকৰ গাওঁ নামৰ লৰাজনবা তুমি চিনি পোৱা নহয়।

ৰতনঃ ওঁ, ও পাওঁ পাওঁ। তাৰ আকৌ কি হঙ্কল। কিবা -

ডট্ প্রোভাইডাৰঃ মানে বাধাটো হঙ্কল মঙলুৰ টিবি হৈছে আৰু তোমাৰ। ই যেইদিন মান ঔষধ খাইছে তাৰ পিছত আৰু না সেইবাৰেনে তোমাৰ ওছৰলৈ আহিলো যে মঙলুৰ কু.. কেনেকৈ খুৱাব পাৰি।

ৰতনঃ হয়, নেকি চাৰ। টিবিৰ দৰৱ মানে ডট্চ নিয়মীয়াকৈ খাবই লাগিব। নহলে কিন্তু বহুত অসুবিধা হব।

ডট্ প্রোভাইডাৰঃ অ অ তুমিটো সেইটো বুজি পাইছা। আৰু তুমি গাৱঁৰ মানুহ হিচাপে বুজাব লাগিব - কৈ ৬ মাহ ডট্চ খাবই লাগিব।

ৰতনঃ চাৰ, ইমান দিনৰ মূৰত আহিছে সেহি একাপে চাহকে খাওঁক (বুলি ঘৈনিয়েকক মা হেৰা আলহি আহিছে।

ডট্ প্রোভাইডাৰঃ হব হব এতিয়া বেলা ভাটি দিলে। কালিলৈ ৰতন আহি তোমাৰ তাত চাহ খাই আমি একেলগে ঘৰলৈ যাম।

ৰতনঃ চাহ - একাপে খালে ভাল পালোঁহেঁতেন।

ডট্ প্রোভাইডাৰঃ (পিঠিত থপৰিয়াই থপৰিয়াই) হব হব বুলি কৈ যায়।

(১ম দৃশ্য অন্ত)

(২য় দৃশ্য)

(সময় ৰাতিপুৱা, চোতালত মঙলুৰ মাকে - ঝাঙুৰে চোতাল সাৰি আছিল আৰু মুখেৰে বোবাবকাই নিজৰ লৰা মঙলুক গালি পাৰি আছিল। মঙলুই ঘৰৰ ভিতৰত কাঁহি কাঁহি মদ খাই আছিল আৰু মাকৰ গালি খাই বাৰান্দাত ওলাই আহি বহে মদৰ বটল লৈ।)

চামেলিঃ (মঙলুৰ মাক) চোতাল সাৰি সাৰি মঙলুক উদ্দেশ্য কৰি .... হৈৰৱ ৰাতিপুৱাই ৰাতিপুৱাই তই এইটুকি ধৰিলি যে তোৰ আৰু কাম নাই। আজি তই লাইনলৈ নাজায় নেকি? এনেকৈ ঘৰত বহি বহি থাকিবি নেকি? ঘৰখন কেনেকৈ চলিব এনেদৰে থাকিলে?

মঙলুঃ এই নাজাওঁ যা..... (কাঁহিবলৈ ধৰে)

চামেলিঃ তই দেখিছো কাঁহি কাঁহি এই মৰিবি, ডবৰু নোমুৱা হলি; চৌধুৰি ছাৰ ওচৰলৈও নোজোৱা হঙ্কলি। কি যে হঙ্কৰ, ভগবানেহে জানা - মই তোৰ লগত ডোৱাইৰছো দেই -

মঙলু: সেই ডৰৱ খুপা খাবলৈ মই নাজাওঁ দেই মোৰ যাই ভাল নালাগে...তোৰ যি হব হব তই চিন্তা কৰিব নালাগে - তই তুৰ কাম কৰি থাক।

(ঠিক এনে সময়তে ডট্ প্রোভাইডাৰ: মিঃ চৌধুৰী আহে, ৰতন অপাং-পিচাকৈ মঙলুৰ ঘৰলৈ কথা পাতি পাতি মঙলুৰ চোতালত ..... কৰে।

ৰতন: চিঞৰি চিঞৰি অন্ধ বাইদেউ অন্ধ বাইদেউ মঙলু ঘৰত আছেনে .....?

চামেলি: ওপৰলৈ মুৰ তুলি বাহিৰলৈ চাই কোন অই বুলি চিঞৰে।

(ৰতন আৰু মিঃ চৌধুৰী চোতালত প্রৱেশ কৰে।)

ৰতন: অন্ধ বহিদেউ আমি আহিছো। মঙলুৰ লগ কৰিবলৈ।

চামেলি: অন্ধ অ আহক আহক। অন্ধ ৰতন দেমুন... (অন্ধ এখেত ..... (চৌধুৰীৰ পিনে চাই চাই)

ৰতন: এখেতে আপুনি চিনিপোৱা নাইনেকি? এখেত (ডট্ প্রোভাইডাৰ চৌধুৰী ডাঙৰীয়া) (টিবি ডৰৱ খুৱাই মানুহ)

চামেলি: অ এতিয়াহে চিনি পাইছো। (দুয়ো দুয়োকে নমস্কাৰ জনাই অলপ আগতেই আপোনাৰ কথাকেই কৈ আছিলো।

(ৰতন আৰু চৌধুৰীয়ে একেলগে হয়নেকি বুলি কয়) আপুনালোক ৰাতিপুৱাই আমাৰ দুখীয়া প্রজাৰ কিয় বা আহিলে?)

ৰতন: বাইদেউ এটা কথা হস্কল নহয় মানে মোক চৌধুৰী ছাৰে কৈছে আপোনাৰ লৰা মঙলুয়ে বহুদিনধৰি টিবি ডৰৱ খুৱা নাই।

চামেলি: মই তাক কৈ কৈ ভাগৰি পৰিছো। মই ভাবি আছিলো তাক কি ব্যৱস্থা কৰি ঔষধ খুয়াই সুস্থ কৰিব পাৰিম। আপোনালোক আহিল ভালেই কৰিলে দিয়ক।

ৰতন: মোৰ কথা আপোনী জানেই চাগে মই কেনেকুৱা হৈ গৈছিলো। মৃত্যুৰ মুখৰ পৰা কেনেকৈ বাচিছো। নিয়মীয়াকৈ ৬ মাহ ডট্চ খাই মই এতিয়া সম্পূর্ণ সুস্থ। এতিয়া যিকোনো কাম হেলাৰতে কৰিব পাৰো।

মঙলু: মই ঔষধ খাবলৈ নাযাওঁ ... সেই খোপা ঔষধ খালে মই মৰি থাকিম।

ৰতন: মঙলু, তই একো ভয় কৰিব নালাগে। চৌধুৰী চাব আছে নহয়। বল বল ডাক্তৰ ছাবৰ ওচৰলৈ আমি সকলোতে তোমাক লৈ যাম।

মঙলু: মই আৰু ঔষধ/ডৰব নাখাওঁ আৰু নাখাওঁ।

চামেলি: বস্কল বস্কল তই নাজাও বুলি কলেই হবনে?

(ৰতন, চামেলি আৰু চৌধুৰী সকলো মিলি জুৰ কৰি ডাক্তৰৰ ওচৰলৈ মঙলুক লৈ যায়। গৈ থাকোতে চৌধুৰীয়ে মঙলুক কয়।

চৌধুৰী: মঙলু তই/তুমি একো চিন্তা কৰিব নালাগে মাত্র নিয়মীয়াকৈ ঔষধ খাবলৈ যাব লাগিব।

মঙলু: মই আৰু ঔষধ নাখাওঁ বুলি কৈছো নহয়, হস্পিটাল যাই ডাক্তৰৰ ওপৰত.....

ডাক্তৰ বৰা: অঙ্ক চৌধুৰী দেখোন। কি খবৰ? ঠিকেই চলিছেনে?

চৌধুৰী: চাৰ, সব ঠিকেই চলিছে।

ডাঃ বৰা: এওলোক কোন?

চৌধুৰী: এও মঙলু, ডট্চৰ ঔষধ আধা খাই এতিয়া নোখোৱা হল্ল। এও ৰতন, ডট্চ খাই শেষ কৰি এতিয়া সম্পূর্ণ আৰোগ্য হল্ল, আৰু এইয়া মঙলুৰ মাক;

ডাঃ বৰা: আচ্ছা, বহা বহা, সকলোৰে ভালদৰে বহি লোবাচোন। আৰু মঙলু কেৱাজোন তুমি কিয় ঔষধ নোখোৱা হলা।

মঙলু: খালে বোট ফুলে, বমি হয়, গা বেয়া লাগে, মুৰ ঘূৰাই।

ডাঃ বৰা: ৰবা ৰবা, এই ধৰণৰ কথাবোৰ কেতিয়াবা হব পাৰে। কিন্তু তাৰ বাবে তুমি ঔষধ নোখোৱাকৈ নাথাকিবা। আচ্ছা তুমি কোৱাচোন ৰতনৰ অৱস্থা আগতে কেনে আছিল? একেবাৰে শুকান জেং খৰি যেন আছিল। এতিয়া গোটেইটো সম্পূর্ণকৈ ঔষধ খাই ভীম হোবাদি হল। আৰু এটা কথা তুমি বিয়া-বাৰু কৰালেনে?

মঙলু: কৰালো চাৰ!

ডাঃ বৰা: লৰাছোৱালী আছে!

মঙলু: আছে চাৰ, তেনেই সৰু হৈ আছে।

ডাঃ বৰা: এতিয়া এটা কথা তুমি জানানে যক্ষা ৰোগ কেনেকৈ বিয়পে।

মঙলু: নাজানে চাৰ।

ডাঃ বৰা: যক্ষা ৰোগ বতাহৰ মধ্যে মেৰে বিয়পে, যক্ষোৰোগীয়ে যেতিয়া কাহে বা হাচিয়াই এই বিজাণু বতাহত মিহলি হয় আৰু উশাহৰ মধ্যে মৰে আন লোকৰ দেহত প্রৱেশ কৰে। এতিয়া তুমি যদি সম্পূর্ণ ঔষধ নোখোৱা তেনেহলে ই তোমাৰ পৰিয়াললৈ বিয়পিব পাৰে। তোমাৰ মা অথবা কনমানিটাৰ যক্ষা হোবাটো তুমি বিচাৰানে?

মঙলু: নিবিচাৰো চাৰ!

ডাঃ বৰা: তেনেহলে এতিয়া তুমি কি কৰিবা।

মঙলু: মই ঔষধ নিয়মিত ভাবে খাহো।

ডাঃ বৰা: মঙলু আৰু এটা কথা, মই তোমাৰ পিচফালে এটা মদৰ বটল দেখা পাইছো, তাৰ মানে তুমি মদ খোৱা! মদ খালে শৰীৰৰ ক্ষতি হৈ যক্ষাৰোগ আৰোগ্য নোহোৱা হল, গতিকে তুমি আজিয়েই মদ ত্যাগ কৰিলো বুলি প্রতিজ্ঞা কৰা আৰু সকলোৰে সন্মুখত মদখিনি পেলাই দিয়া।

মঙলু: ভাইজ, মই আজি শপত খাইছো - আজিৰ পৰা মই যক্ষাৰোগৰ ঔষধ নিয়মীয়াকৈ খাম আৰু কোনো মাদক দ্রব্য ব্যৱহাৰ নকৰো।

এই আহা (গীত)

এই আহা, আহা .....

আগপিছ এশুনি ওচৰলৈ আহা২

জ্বৰ হয় গধুলি উশাহত ফিৰিলি

দুসপ্তাহৰ কাঁহত তুমি কিয়নো ভোগা।২

এই আহা .....

দুটাকৈ খোৱাৰে তুমি পৰীক্ষা কৰোৱা২

দৰব খালে নিয়মীয়া নহয় ৰোগ নিয়মীয়া

ছমাহৰ দৰবত নহয় ঘূনীয়া।২

এই আহা .....।২

ছমাহৰ দৰব ইয়াত পাব নিয়মীয়া।

ডট্চ বিনামূলীয়া তথাপি কিনি খোৱা

ঘৰবাৰী বেচি কিয় সর্বাহাৰা হোৱা।

এই আহা .....।

এই আহা .....॥৩

শ্লোগান: যক্ষা আমি প্রতিৰোধ কৰিব পাৰোঁ।

ডট্চ জিন্দাবাদ

अधिक जानकारी के लिए निम्न पते पर संपर्क करें:

केन्द्रीय टीबी प्रभाग

स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
निर्माण भवन
नई दिल्ली – 110011
www.tbcindia.org

केन्द्रीय टीबी प्रभाग, स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय